समूचे चेहरे का प्रत्यारोपण

हाल ही में पता चला है कि स्पेन के एक तीस वर्षीय किसान के पूरे चेहरे का सफल प्रत्यारोपण किया गया है। एक हादसे के दौरान उसके चेहरे का निचला हिस्सा नष्ट हो गया था। अब वह पूरी तरह स्वस्थ है। उम्मीद है कि जल्दी ही वह बात करना, भोजन करना, हंसना-मुस्कराना भी सीख जाएगा।

जॉन पेरे बैरेट के नेतृत्व में वाल डिहेबरॉन युनिवर्सिटी हॉस्पिटल के 30 सर्जन की एक टीम ने सबसे पहले मरीज़ के चेहरे पर बची हुई त्वचा, नसों और धमनियों को हटा दिया। अब चेहरे पर आंखें और जीभ ही शेष बची थीं। तब टीम ने एक दानदाता व्यक्ति (जिसकी मृत्यु हो चुकी थी) के सम्पूर्ण चेहरे से इसे बदल दिया। इसमें उसकी सारी त्वचा, मांसपेशियां और तंत्रिकाएं, नाक, होंठ, तालू, सारे दांत, गाल की हड्डियों समेत पूरा निचला जबड़ा शामिल था। अत्यंत सावधानी से मरीज़ के चेहरे पर बचे हिस्सों से इन्हें जोड़ दिया गया और साथ ही रक्त प्रवाह भी स्थापित कर दिया गया। अंतिम चरण में सर्जन्स ने हड्डियां प्रत्यारोपित कर मरीज़ के चेहरे से तंत्रिकाओं को जोड़ दिया।

फ्रांस की इसाबेल डिनोरी ने 2005 में चेहरे का पहला प्रत्यारोपण करवाया था जिसके बाद ऐसे 10 और प्रत्यारोपण हो चुके हैं लेकिन हाल में हुआ प्रत्यारोपण बहुत ही व्यापक है। यह पहला वाकया है जिसमें ऊपरी और निचले दोनों जबड़ों और दोनो पलकों का प्रत्यारोपण किया गया है।

इस संदर्भ में चेहरे के प्रत्यारोपण के अन्य मरीज़ों पर नज़र डालना लाज़मी होगा। जिन मरीज़ों का उपचार फ्रांस में हुआ था उनमें से एक की मृत्यु पिछले साल हो गई लेकिन इसका कारण बैक्टीरियल संक्रमण था और उसका प्रत्यारोपण से कोई लेना-देना नहीं था। एक अन्य मरीज़ की प्रतिरक्षा प्रणाली दो बार प्रत्यारोपित अंगों पर हमले कर चुकी है मगर वह जीवित है। इसके लिए उसे प्रतिरक्षा तंत्र का दमन करने वाली शक्तिशाली दवाइयां लेनी पड़ती हैं।

ऑपरेशन के 18 महीने बाद एक मरीज़ में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। उसके उपचार में फिज़ियोथेरपी और स्पीच थेरेपी को शामिल किया गया था। वह अब मुस्करा सकती है, स्वरों का उच्चारण कर सकती है साथ ही सामान्य संवेदनाओं (जैसे एक चुंबन) को अपने चेहरे पर महसूस भी कर सकती है।

पूरे चेहरे के प्रत्यारोपण का सबसे बड़ा फायदा यह है कि यह सिर्फ एक मास्क की तरह नहीं होता। इसके जरिए प्रदाता की तंत्रिकाएं और रक्त वाहिकाओं को प्रत्यारोपण के दौरान मरीज़ के ऊतकों से जोड़ दिया जाता है जिससे यह पूरा प्रत्यारोपण जीवित हो उठता है। इसका मतलब है कि वह शख्स अपने नए चेहरे के साथ मुस्करा सकता है, बातचीत कर सकता है, खाना खा सकता है, चेहरे के भाव भी प्रदर्शित कर सकता है और आंखों को खोल-बंद कर सकता है। अर्थात यह सिर्फ चेहरे के क्षतिग्रस्त हिस्सों की क्षतिपूर्ति नहीं है बल्कि उनको कामकाजी भी बनाया गया है।

वैसे प्रत्यारोपित ऊतकों को अस्वीकार होने से बचाने के लिए प्रतिरक्षा तंत्र को कुछ स्तर तक दबाने की आवश्यकता होती है लेकिन वर्तमान में प्रयुक्त साधन इसे बहुत कमज़ोर कर देते हैं जिसकी वजह से मरीज़ में संक्रमण और कैंसर के जोखिम असामान्य रूप से बढ़ जाते हैं। उम्मीद है कि कुछ ही महीनों में एंटीबाडीज़ पर आधारित एक हल्के उपचार का परीक्षण किया जाएगा। शुरुआत में यह परीक्षण गुर्दे के प्रत्यारोपण के दौरान किया जाएगा।***(स्रोत फीचर्स)***